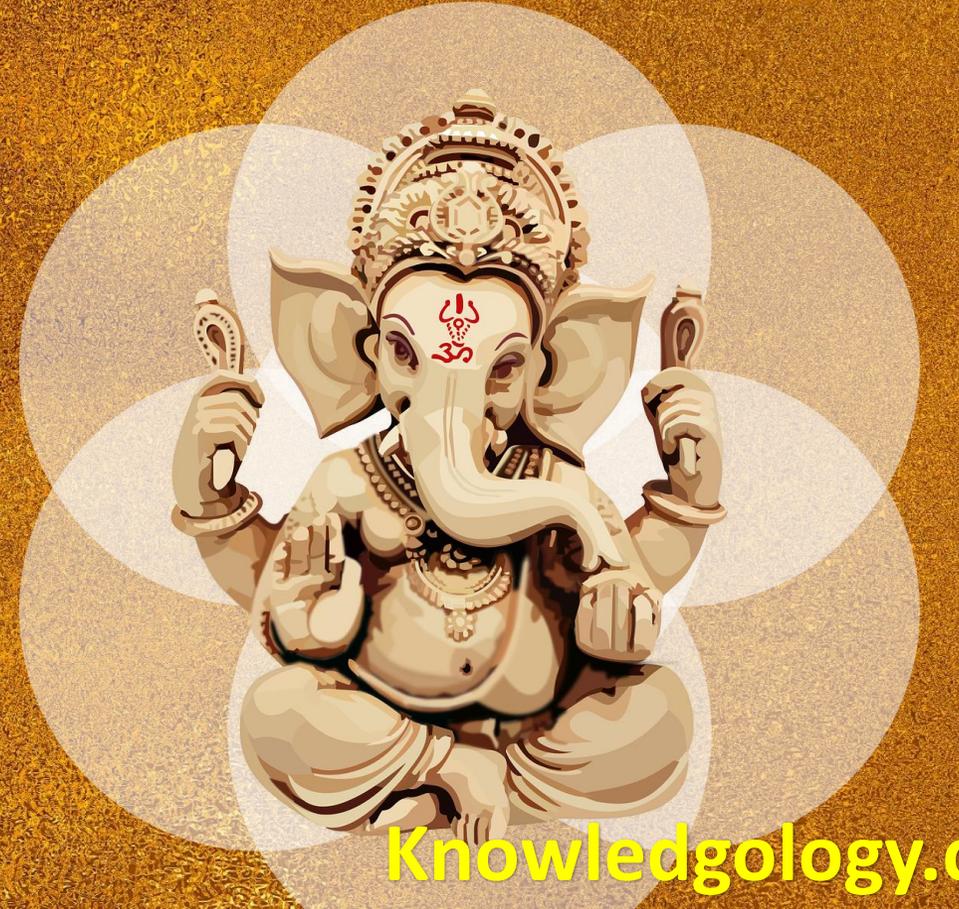


॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ श्रीमहासरस्वत्यै नमः ॥



इस पुस्तिका का उद्देश्य है -

1. हमारे विद्यार्थी की सभी पाठों को याद करने में सहायता करना।
2. उन्हें याद की हुई व्याकरण को लिखने में सहायता करना।
3. संस्कृत में रूचि को सुदृढ करना।

संस्कृतम्

पाठः:48



इस पाठ में हम
पंचमी विभक्ति
सीखेंगे।

भय और रक्षा के भाव में पंचमी होती है।

सः सिंहात् बिभेति।
वह शेर से डरता है।

सः भयात् त्रायते।
वह भय से बचाता है।

धर्मः पापात् रक्षति।
धर्म पाप से रक्षा करता है।

छिपना, पढना, पैदा होना - इन अर्थों में भी पंचमी होती है।

चौरः राजपुरुषेभ्यः निलीयते।

चोर राजा के पुरुषों से छिपता है।

आचार्यात् वेदं पठति।

आचार्य से वेद पढता है।

पर्वतात् नदी प्रभवति।

नदी पर्वत से पैदा होती है।

ऋते प्राक् प्रत्यक् बहिः परम्

ज्ञानात् ऋते सुखम् न अस्ति।

ज्ञान के बिना सुख नहीं है।

ग्रामात् प्राक् मन्दिरं अस्ति।

गाँव से पूर्व में मंदिर है।

नगरात् प्रत्यक् नदी।

नगर से पश्चिम में नदी है।

ऋते प्राक् प्रत्यक् बहिः परम्

ज्ञानात् ऋते सुखम् न अस्ति।
ज्ञान के बिना सुख नहीं है।

ग्रामात् बहिः वनम्।
गाँव से बाहर वन है।

कालात् परं न अस्ति किञ्चित्।
समय से बाहर कुछ भी नहीं है।

विना के साथ द्वितीया, तृतीया और पंचमी कोई भी
विभक्ति आ सकती है।

रामं विना।

रामेण विना।

रामात् विना।

संस्कृतम्

पाठः:49



इस पाठ में हम
षष्ठी विभक्ति
सीखेंगे ।

संबंध बताने के लिए **षष्ठी** का प्रयोग किया जाता है।

नृपस्य पुत्रः

राजा का पुत्र

नगरस्य द्वारम्

नगर का दरवाजा

वृक्षाणाम् छाया

वृक्षों की छाया

नद्याः तटम्

नदी का किनारा

संबंध बताने के लिए **षष्ठी** का प्रयोग किया जाता है।

नृप**स्य** पुत्रः राजा का पुत्र

नगर**स्य** द्वारम् नगर का दरवाजा

वृक्षा**णाम्** छाया वृक्षों की छाया

नद्याः तटम् नदी का किनारा

दूरम् और अन्तिकम् के योग में

ग्रामस्य दूरम् नदी।

गाँव से दूर नदी है।

पर्वतस्य अन्तिकम् वनम्।

पर्वत के पास वन है।

उद्यानस्य शोभा पुष्पाणि।

सैनिकाः देशस्य रक्षकाः।

पुष्पाणाम् गन्धम् मधुरम्।

शिवस्य अस्त्रम् त्रिशूलम्।

अशोकः देवानाम् प्रियः आसीत्।

आम्रस्य रसम् मधुरम्।

कंसः कृष्णस्य मातुलः आसीत्।

पितरौ मे माम् पाठयतः।

तव मित्रम् कुत्र निवसति?

अस्माकम् गृहे कूपम् अस्ति।

संस्कृतम्

पाठः 50



इस पाठ में हम
क्त प्रत्यय
सीखेंगे ।

क्त प्रत्यय

क्त प्रत्यय का अर्थ English verb की तीसरी form

के समान होता है।

संस्कृत

हिन्दी

English

गत

गया हुआ

gone

खादित

खाया हुआ

eaten

पीत

पीया हुआ

drunk

लिखित

लिखा हुआ

written

क्त प्रत्यय

भू + क्त
गम् + क्त
नी + क्त
प्रच्छ् + क्त
पत् + क्त
रक्ष् + क्त
वद् + क्त

भूत हुआ
गत गया हुआ
नीत लाया हुआ
पृष्ट पूछा हुआ
पतित गिरा हुआ
रक्षित रक्षा किया हुआ
उक्त कहा हुआ

क्त प्रत्यय

ग्रह् + क्त
बन्ध् + क्त
ह्वे + क्त
नम् + क्त
मन् + क्त
गण् + क्त
कथ् + क्त

गृहीत पकड़ा हुआ
बद्ध बाँधा हुआ
हूत बुलाया हुआ
नत झुका हुआ
मत माना हुआ
गणित गिना हुआ
कथित कहा हुआ

क्त प्रत्यय

ज्ञा + क्त

ज्ञात जाना हुआ

विद् + क्त

विदित जाना हुआ

मुच् + क्त

मुक्त मुक्त किया हुआ

लिख् + क्त

लिखित लिखा हुआ

पठ् + क्त

पठित पढा हुआ

स्मृ + क्त

स्मृत याद किया हुआ

हन् + क्त

हत मारा हुआ

क्त प्रत्यय

लभ् + क्त

लब्ध पाया हुआ

पा + क्त

पीत पीया हुआ

खाद् + क्त

खादित खाया हुआ

क्री + क्त

क्रीत खरीदा हुआ

त्यज् + क्त

त्यक्त त्यागा हुआ

क्त प्रत्यय

लिंग के अनुसार इसके रूप बदलते हैं

पुंल्लिंग

स्त्रीलिंग

नपुंसकलिंग

गतः

गता

गतम्

पठितः

पठिता

पठितम्

लब्धः

लब्धा

लब्धम्

मुक्तः

मुक्ता

मुक्तम्

जो सामग्री कंठस्थ करनी चाहिए,
उसमें यह पुस्तिका आपको सहायता देती है,
पूरे पाठ तो आप **knowledgology** पर ही
देख सकते हैं।

knowledgology

आपका अपना **YouTub**e channel है

SUBSCRIBE



knowledgology.com

संस्कृतम्

पाठः 51



इस पाठ में हम
कतवतु प्रत्यय
सीखेंगे ।

क्तवतु प्रत्यय

क्तवतु प्रत्यय का अर्थ भूतकाल में होता है।

भू	+	क्तवतु	भूतवान् हुआ
गम्	+	क्तवतु	गतवान् गया
नी	+	क्तवतु	नीतवान् लाया
प्रच्छ्	+	क्तवतु	पृष्टवान् पूछा
पत्	+	क्तवतु	पतितवान् गिरा
रक्ष्	+	क्तवतु	रक्षितवान् रक्षा की
वद्	+	क्तवतु	उक्तवान् कहा

क्तवतु प्रत्यय

ग्रह् + क्त
बन्ध् + क्त
त्यज् + क्त
नम् + क्त
मन् + क्त
गण् + क्त
कथ् + क्त

गृहीतवान् लिया
बद्धवान् बांधा
त्यक्तवान् त्यागा
नतवान् झुका
मतवान् माना
गणितवान् गिना
कथितवान् कहा

क्तवतु प्रत्यय

ज्ञा + क्त

ज्ञातवान् जाना

विद् + क्त

विदितवान् जाना

मुच् + क्त

मुक्तवान् मुक्त किया

लिख् + क्त

लिखितवान् लिखा

पठ् + क्त

पठितवान् पढा

स्मृ + क्त

स्मृतवान् याद किया

हन् + क्त

हतवान् मारा

क्तवतु प्रत्यय

लभ् + क्त

पा + क्त

खाद् + क्त

क्री + क्त

लब्धवान् पाया

पीतवान् पीया

खादितवान् खाया

क्रीतवान् खरीदा

क्तवतु प्रत्यय

लिंग के अनुसार इसके रूप बदलते हैं

पुंल्लिंग

स्त्रीलिंग

नपुंसकलिंग

गतवान्

गतवती

गतवत्

पठितवान्

पठितवती

पठितवत्

लब्धवान्

लब्धवती

लब्धवत्

मुक्तवान्

मुक्तवती

मुक्तवत्

क्तवतु प्रत्यय

वचन के अनुसार इसके रूप बदलते हैं

एकवचन

द्विवचन

बहुवचन

गतवान्

गतवन्तौ

गतवन्तः

गतवती

गतवत्यौ

गतवत्यः

संस्कृतम्

पाठः 52



इस पाठ में हम
शतृ प्रत्यय
सीखेंगे ।

शतृ प्रत्यय

शतृ प्रत्यय का प्रयोग हम विशेषण बनाने के लिए करते हैं।
English में इसे Present Participle कहते हैं।

पुंल्लिंग

स्त्रीलिंग

गच्छत्

गच्छन्ती

जाता हुआ/हुई

going

पश्यत्

पश्यन्ती

देखता हुआ/हुई

looking

वदत्

वदन्ती

बोलता हुआ/हुई

speaking

शतृ प्रत्यय

भू	+	शतृ	भवत्	होता	हुआ
नी	+	शतृ	नयत्	लाता	हुआ
नम्	+	शतृ	नमत्	झुकता	हुआ
प्रच्छ्	+	शतृ	पृच्छत्	पूछता	हुआ
पत्	+	शतृ	पतत्	गिरता	हुआ
रक्ष्	+	शतृ	रक्षत्	बचाता	हुआ
वद्	+	शतृ	वदत्	कहता	हुआ

शतृ प्रत्यय

वस्	+	शतृ	वसत्	बसता	हुआ
जि	+	शतृ	जयत्	जीतता	हुआ
स्था	+	शतृ	तिष्ठत्	बैठता	हुआ
दृश्	+	शतृ	पश्यत्	देखता	हुआ
श्रु	+	शतृ	शृण्वत्	सुनता	हुआ
खाद्	+	शतृ	खादत्	खाता	हुआ
त्यज्	+	शतृ	त्यजत्	त्यागता	हुआ

शतृ प्रत्यय

अस्	+	शतृ	सत्	होता हुआ
जागृ	+	शतृ	जाग्रत्	जागता हुआ
रुद्	+	शतृ	रुदत्	रोता हुआ
दा	+	शतृ	ददत्	देता हुआ
भी	+	शतृ	बिभ्यत्	डरता हुआ
क्रुध्	+	शतृ	क्रुध्यत्	क्रोध करता हुआ
नृत्	+	शतृ	नृत्यत्	नाचता हुआ

शतृ प्रत्यय

चि	+	शतृ	चिन्वत्	चुनता	हुआ
मुच्	+	शतृ	मुंचत्	छोडता	हुआ
लिख्	+	शतृ	लिखत्	लिखता	हुआ
युज्	+	शतृ	युंजत्	जोडता	हुआ
कृ	+	शतृ	कुर्वत्	करता	हुआ
ज्ञा	+	शतृ	जानत्	जानता	हुआ
बन्ध्	+	शतृ	बध्नत्	बाँधता	हुआ

लिखत् लिखता हुआ

लिखन्

लिखन्तम्

लिखता

लिखते

लिखतः

लिखतः

लिखति

हे लिखन्!

लिखन्तौ

लिखन्तौ

लिखद्भ्याम्

लिखद्भ्याम्

लिखद्भ्याम्

लिखतोः

लिखतोः

हे लिखन्तौ!

लिखन्तः

लिखतः

लिखद्भिः

लिखद्भ्यः

लिखद्भ्यः

लिखताम्

लिखत्सु

हे लिखन्तः!

संस्कृतम्

पाठः 53



इस पाठ में हम
शानच् प्रत्यय
सीखेंगे ।

शानच् प्रत्यय

शानच् का अर्थ शत्रु के ही समान होता है।

शत्रु	शानच्	
सेवत्	सेवमान	सेवा करता हुआ
लभत्	लभमान	प्राप्त करता हुआ
याचत्	याचमान	माँगता हुआ

शानच् प्रत्यय

सेव् शानच्

सेवमान सेवा करता हुआ

भाष् शानच्

भाषमाण बोलता हुआ

याच् शानच्

याचमान माँगता हुआ

लभ् शानच्

लभमान प्राप्त करता हुआ

नी शानच्

नीयमान लाता हुआ

आस् शानच्

आसीन बैठा हुआ

शी शानच्

शयान सोता हुआ

शानच् प्रत्यय

दा शानच्

ददान देता हुआ

युष् शानच्

युध्यमान युद्ध करता हुआ

मुंच् शानच्

मुंचमान छोड़ता हुआ

रुष् शानच्

रुन्धान रोकता हुआ

युज् शानच्

युञ्जान जोड़ता हुआ

कृ शानच्

कुर्वाण करता हुआ

क्री शानच्

क्रीणान खरीदता हुआ

शानच् प्रत्यय

ज्ञा शानच्

जानान जानता हुआ

कथ् शानच्

कथयमान कहता हुआ

चिन्त् शानच्

चिन्तयमान सोचता हुआ

भक्ष् शानच्

भक्षयमाण खाता हुआ

शानच् प्रत्यय

पुंल्लिंग

सेवमान

नीयमान

आसीन

युध्यमान

कुर्वाण

स्त्रीलिंग

सेवमाना

नीयमाना

आसीना

युध्यमाना

कुर्वाणा

लिङ्ग के अनुसार
शानच् के रूप बदलते हैं:

शानच् प्रत्यय

शानच् प्रत्यय से बने पुंल्लिङ्ग शब्दों
के रूप देव के समान चलते हैं:

युध्यमानः	युध्यमानौ	युध्यमानाः
युध्यमानम्	युध्यमानौ	युध्यमानान्
युध्यमानेन	युध्यमानाभ्याम्	युध्यमानैः
युध्यमानाय	युध्यमानाभ्याम्	युध्यमानेभ्यः

शानच् प्रत्यय

शानच् प्रत्यय से बने स्त्रीलिङ्ग शब्दों
के रूप लता के समान चलते हैं:

कुर्वाणा

कुर्वाणे

कुर्वाणाः

कुर्वाणाम्

कुर्वाणे

कुर्वाणाः

कुर्वाणया

कुर्वाणाभ्याम्

कुर्वाणाभिः

कुर्वाणायै

कुर्वाणाभ्याम्

कुर्वाणाभ्यः

संस्कृतम्

पाठः 54



इस पाठ में हम
तुमुन् प्रत्याय
सीखेंगे ।

तुमुन् प्रत्यय

तुमुन् प्रत्यय का प्रयोग **के लिए** अर्थ में होता है:-

भू	+	तुमुन्	भवितुम् होने के लिए
गम्	+	तुमुन्	गन्तुम् जाने के लिए
नी	+	तुमुन्	नेतुम् लाने के लिए
वस्	+	तुमुन्	वस्तुम् बसने के लिए
भी	+	तुमुन्	भेत्तुम् डरने के लिए
विद्	+	तुमुन्	वेत्तुम् जानने के लिए

तुमुन् प्रत्यय

तुमुन् प्रत्यय का प्रयोग **के लिए** अर्थ में होता है:-

स्था + तुमुन् स्थातुम् ठहरने के लिए

दृश् + तुमुन् दृष्टुम् देखने के लिए

श्रु + तुमुन् श्रोतुम् सुनने के लिए

खाद् + तुमुन् खादितुम् खाने के लिए

गै + तुमुन् गातुम् गाने के लिए

त्यज् + तुमुन् त्यक्तुम् त्यागने के लिए

तुमुन् प्रत्यय

तुमुन् प्रत्यय का प्रयोग **के लिए** अर्थ में होता है:-

रुध्	+	तुमुन्	रोद्धुम्	रोकने के लिए
क्री	+	तुमुन्	क्रेतुम्	खरीदने के लिए
कृ	+	तुमुन्	कर्तुम्	करने के लिए
पत्	+	तुमुन्	पतितुम्	गिरने के लिए
रक्ष्	+	तुमुन्	रक्षितुम्	बचाने के लिए
क्षिप्	+	तुमुन्	क्षेप्तुम्	फेंकने के लिए

तुमुन् प्रत्यय

तुमुन् प्रत्यय का प्रयोग **के लिए** अर्थ में होता है:-

नश् + तुमुन् नष्टुम् नाश करने के लिए

आप् + तुमुन् आप्तुम् पाने के लिए

मृ + तुमुन् मर्तुम् मरने के लिए

यज् + तुमुन् यष्टुम् यज्ञ करने के लिए

हन् + तुमुन् हन्तुम् मारने के लिए

दह् + तुमुन् दग्धुम् जलाने के लिए

तुमुन् प्रत्यय

तुमुन् प्रत्यय का प्रयोग **के लिए** अर्थ में होता है:-

जीव्	+	तुमुन्	जीवितुम्	जीने के लिए
पच्	+	तुमुन्	पक्तुम्	पकाने के लिए
दा	+	तुमुन्	दातुम्	देने के लिए
रुद्	+	तुमुन्	रोदितुम्	रोने के लिए
प्रच्छ्	+	तुमुन्	प्रष्टुम्	पूछने के लिए
मुच्	+	तुमुन्	मोक्तुम्	मुक्त करने के लिए

तुमुन् प्रत्यय

तुमुन् प्रत्यय का प्रयोग **के लिए** अर्थ में होता है:-

लिख्	+	तुमुन्	लिखितुम्	लिखने के लिए
भुज्	+	तुमुन्	भोक्तुम्	खाने के लिए
छिद्	+	तुमुन्	छेत्तुम्	छेदने के लिए
जागृ	+	तुमुन्	जागरितुम्	जागने के लिए
दुह्	+	तुमुन्	दोग्धुम्	दुहने के लिए
वच्	+	तुमुन्	वक्तुम्	कहने के लिए

तुमुन् प्रत्यय

तुमुन् प्रत्यय का प्रयोग **के लिए** अर्थ में होता है:-

ग्रह् + तुमुन् ग्रहीतुम् लेने के लिए

ज्ञा + तुमुन् ज्ञातुम् जानने के लिए

बन्ध् + तुमुन् बद्धुम् बाँधने के लिए

कथ् + तुमुन् कथयितुम् कहने के लिए

सह् + तुमुन् सोढुम् सहन करने के लिए

स्पृश् + तुमुन् स्पर्शुम् छूने के लिए

संस्कृतम्

पाठः 55



इस पाठ में हम
ल्युट् प्रत्यय
सीखेंगे।

ल्युट् प्रत्यय

ल्युट् प्रत्यय लगने पर धातु से

अन जोड़ा जाता है :

शी ल्युट्

शयनम् सोना

दा ल्युट्

दानम् देना

ज्ञा ल्युट्

ज्ञानम् जानना

पा ल्युट्

पानम् पीना

दृश् ल्युट्

दर्शनम् देखना

रक्ष् ल्युट्

रक्षणम् बचाना

ल्युट् प्रत्यय

जीव् ल्युट्

जीवनम्

जीना

अर्ज् ल्युट्

अर्जनम्

कमाना

अर्च् ल्युट्

अर्चनम्

पूजा करना

गर्ज् ल्युट्

गर्जनम्

गरजना

गै ल्युट्

गायनम्

गाना

ज्वल् ल्युट्

ज्वलनम्

जलना

ल्युट् प्रत्यय लगने पर धातु से

अन जोड़ा जाता है :

ल्युट् प्रत्यय

धाव् ल्युट्

धावनम्

ल्युट् प्रत्यय लगने पर धातु से

दौड़ना

अन जोड़ा जाता है :

ध्यै ल्युट्

ध्यानम्

ध्यान करना

भज् ल्युट्

भजनम्

भजन करना

भू ल्युट्

भरणम्

भरण पोषण करना

जागृ ल्युट्

जागरणम्

जागना

हन् ल्युट्

हननम्

मारना

ल्युट् प्रत्यय

नृत् ल्युट्

नर्तनम्

नाचना

कथ् ल्युट्

कथनम्

कहना

पाल् ल्युट्

पालनम्

पालन करना

भक्ष् ल्युट्

भक्षणम्

खाना

भाष् ल्युट्

भाषणम्

बोलना

ल्युट् प्रत्यय लगने पर धातु से

अन जोड़ा जाता है :

ल्युट् प्रत्यय घञ् प्रत्यय

धातु	ल्युट्	अर्थ	घञ्
पठ्	पठनम्	पढ़ना	पाठः
लिख्	लेखनम्	लिखना	लेखः
स्मृ	स्मरणम्	याद करना	स्मारः
कृ	करणम्	करना	कारः
श्रु	श्रवणम्	सुनना	श्रावः

ल्युट् प्रत्यय

घञ् प्रत्यय

धातु	ल्युट्	अर्थ	घञ्
गम्	गमनम्	जाना	गमः
खाद्	खादनम्	खाना	खादः
दह्	दहनम्	जलाना	दाहः
ग्रह्	ग्रहणम्	पकड़ना	ग्राहः
भुज्	भोजनम्	खाना	भोगः

ल्युट् प्रत्यय

घञ् प्रत्यय

धातु	ल्युट्	अर्थ	घञ्
युज्	योजनम्	जोड़ना	योगः
रम्	रमणम्	रमना	रामः
लभ्	लम्भनम्	पाना	लाभः
बुध्	बोधनम्	जानना	बोधः
चि	चयनम्	चुनना	चायः

ल्युट् प्रत्यय

घञ् प्रत्यय

धातु	ल्युट्	अर्थ	घञ्
जप्	जपनम्	जपना	जापः
हस्	हसनम्	हँसना	हासः
पच्	पचनम्	पकाना	पाकः
पत्	पतनम्	गिरना	पातः
स्पृश्	स्पर्शनम्	छूना	स्पर्शः

संस्कृतम्

पाठः 56



इस पाठ में हम
अ और अच् प्रत्यय
सीखेंगे।

अ प्रत्यय

भिक्ष् भिक्षा

रक्ष् रक्षा

शंक् शंका

लज्ज् लज्जा

बाध् बाधा

ईर्ष्य् ईर्ष्या

मूर्च्छ् मूर्च्छा

क्रीड् क्रीडा

पूज् पूजा

ईह् ईहा

सेव् सेवा

पीड् पीडा

अ प्रत्यय से भाववाचक संज्ञा बनती है,

यह स्त्रीलिङ्ग में होती है।

रूप लता के समान होंगे।

क्तिन् प्रत्यय

क्तिन् प्रत्यय से भाववाचक संज्ञा बनती है,
यह स्त्रीलिङ्ग में होती है।

गम् गतिः भज् भक्तिः

दृश् दृष्टिः भी भीतिः

सृज् सृष्टिः रम् रतिः

नी नीतिः मन् मतिः

पा पीतिः श्रु श्रुतिः

स्मृ स्मृतिः स्तु स्तुतिः

क्तिन् का केवल ति ही
धातु से जुड़ता है।

रूप मतिः के समान होंगे।

क्तिन् प्रत्यय

क्तिन् प्रत्यय से भाववाचक संज्ञा बनती है,
यह स्त्रीलिङ्ग में होती है।

ज्ञा ज्ञातिः पुष् पुष्टिः

वच् उक्तिः तुष् तुष्टिः

बुध् बुद्धिः तृप् तृप्तिः

शक् शक्तिः शुध् शुद्धिः

कृ कृतिः मुच् मुक्तिः

भ्रम् भ्रान्तिः युज् युक्तिः

क्तिन् का केवल ति ही
धातु से जुड़ता है।

रूप मतिः के समान होंगे।

अच् प्रत्यय

नी	नयः
चि	चयः
जि	जयः
क्री	क्रयः
भी	भयः

इकारान्त धातुओं से अच् प्रत्यय लगाकर भाव वाचक संज्ञा बनाते हैं। ये पुल्लिङ्ग होती हैं। रूप देव के समान होते हैं।

संस्कृतम्

पाठः 57



इस पाठ में हम
तव्यत् और अनीयर् प्रत्यय
सीखेंगे ।

तव्यत् प्रत्यय

अनीयर् प्रत्यय

तव्यत् और अनीयर् : करने योग्य, करना चाहिए इत्यादि

धातु तव्यत् अनीयर्

भू भवितव्य भवनीय

पठ् पठितव्य पठनीय

पच् पक्तव्य पचनीय

गम् गन्तव्य गमनीय

तव्यत् प्रत्यय

अनीयर् प्रत्यय

तव्यत् और अनीयर् : करने योग्य, करना चाहिए इत्यादि

धातु तव्यत् अनीयर्

दृश् द्रष्टव्य दर्शनीय

स्था स्थातव्य स्थानीय

स्मृ स्मर्तव्य स्मरणीय

पा पातव्य पानीय

तव्यत् प्रत्यय

अनीयर् प्रत्यय

तव्यत् और अनीयर् : करने योग्य, करना चाहिए इत्यादि

धातु तव्यत् अनीयर्

सेव् सेवितव्य सेवनीय

लभ् लब्धव्य लभनीय

याच् याचितव्य याचनीय

नी नेतव्य नयनीय

तव्यत् प्रत्यय

अनीयर् प्रत्यय

तव्यत् और अनीयर् : करने योग्य, करना चाहिए इत्यादि

धातु तव्यत् अनीयर्

ह हर्तव्य हरणीय

अस् भवितव्य भवनीय

स्तु स्तोतव्य स्तवनीय

स्वप् स्वप्तव्य स्वपनीय

तव्यत् प्रत्यय

अनीयर् प्रत्यय

तव्यत् और अनीयर् : करने योग्य, करना चाहिए इत्यादि

धातु तव्यत् अनीयर्

हन् हन्तव्य हननीय

शाष् शासितव्य शासनीय

हु होतव्य हवनीय

भी भेतव्य भयनीय

तव्यत् प्रत्यय

अनीयर् प्रत्यय

तव्यत् और अनीयर् : करने योग्य, करना चाहिए इत्यादि

धातु तव्यत् अनीयर्

दा दातव्य दानीय

नृत् नर्तितव्य नर्तनीय

नश् नष्टव्य नशनीय

युध् योद्धव्य योधनीय

तव्यत् प्रत्यय

अनीयर् प्रत्यय

तव्यत् और अनीयर् : करने योग्य, करना चाहिए इत्यादि

धातु तव्यत् अनीयर्

जन् जनितव्य जननीय

विद् वेत्तव्य वेदनीय

स्पृश् स्पृष्टव्य स्पर्शनीय

प्रच्छ् प्रष्टव्य प्रच्छनीय

तव्यत् प्रत्यय

अनीयर् प्रत्यय

तव्यत् और अनीयर् : करने योग्य, करना चाहिए इत्यादि

धातु

तव्यत्

अनीयर्

शु

श्रोतव्य

श्रवणीय

प्र आप्

प्राप्तव्य

प्रापनीय

कृ

कर्त्तव्य

करणीय

क्री

क्रेतव्य

क्रयणीय

तव्यत् प्रत्यय

अनीयर् प्रत्यय

तव्यत् और अनीयर् : करने योग्य, करना चाहिए इत्यादि

धातु तव्यत् अनीयर्

ग्रह् ग्रहीतव्य ग्रहणीय

ज्ञा ज्ञातव्य ज्ञानीय

चुर् चोरयितव्य चोरणीय

कथ् कथयितव्य कथनीय

यत् प्रत्यय

यत् प्रत्यय चाहिए अर्थ में होता है।

स्था	स्थेयः	चि	चेयः	नम्	नम्यः
पा	पेयः	नी	नेयः	हन्	हन्यः
दा	देयः	जि	जेयः	शक्	शक्यः
धा	धेयः	लभ्	लभ्यः	गद्	गद्यः
भी	भेयः	जप्	जप्यः	वन्द्	वन्द्यः
गै	गेयः	गम्	गम्यः		

ण्यत् प्रत्यय

ण्यत् प्रत्यय चाहिए अर्थ में होता है।

ह	हार्यः	ग्रह्	ग्राह्यः
कृ	कार्यः	त्यज्	त्याज्यः
धृ	धार्यः	पूज्	पूज्यः
पठ्	पाठ्यः	वच्	वाच्यः
पच्	पाच्यः	मन्	मान्यः

अ जोड़ देने से विपरीत अर्थ हो जाता है:

गेय अगेय

कार्य अकार्य

पठनीय अपठनीय

जेय अजेय

ग्राह्य अग्राह्य

करणीय अकरणीय

लब्ध अलभ्य

वाच्य अवाच्य

खादनीय अखादनीय

गम्य अगम्य

भेद्य अभेद्य

दर्शनीय अदर्शनीय

शक्य अशक्य

दृश्य अदृश्य

हन्तव्य अहन्तव्य

हार्य अहार्य

श्रव्य अश्रव्य

संस्कृतम्

पाठः 58



इस पाठ में हम
ण्वुल् और तृच् प्रत्यय
सीखेंगे ।

प्वुल् प्रत्यय

तृच् प्रत्यय

धातु से कर्त्ता बनाने के लिए प्वुल् तथा तृच् लगते हैं।

धातु

प्वुल्

तृच्

कृ

कारकः

कर्त्तृ

पठ्

पाठकः

पठितृ

गै

गायकः

गातृ

दा

दायकः

दातृ

प्वुल् प्रत्यय

तृच् प्रत्यय

धातु से कर्त्ता बनाने के लिए प्वुल् तथा तृच् लगते हैं।

धातु

प्वुल्

तृच्

दृश्

दर्शकः

द्रष्टृ

श्रु

श्रावकः

श्रोतृ

हन्

घातकः

हन्तृ

जन्

जनकः

जनितृ

ण्वुल् प्रत्यय

तृच् प्रत्यय

धातु से कर्त्ता बनाने के लिए ण्वुल् तथा तृच् लगते हैं।

धातु	ण्वुल्	तृच्
नी	नायकः	नेतृ
सृज्	सर्जकः	स्रष्टृ
वच्	वाचकः	वक्तृ
स्मृ	स्मारकः	स्मर्तृ

प्वुल् प्रत्यय

तृच् प्रत्यय

धातु से कर्त्ता बनाने के लिए प्वुल् तथा तृच् लगते हैं।

धातु

प्वुल्

तृच्

लिख्

लेखकः

लेखितृ

यज्

याजकः

यष्टृ

पच्

पाचकः

पत्तृ

भिद्

भेदकः

भेत्तृ

प्वुल् प्रत्यय

तृच् प्रत्यय

धातु से कर्त्ता बनाने के लिए प्वुल् तथा तृच् लगते हैं।

धातु

प्वुल्

तृच्

ग्रह्

ग्राहकः

ग्रहीतृ

भू

भावकः

भवितृ

भुज्

भोजकः

भोक्तृ

दुह्

दोहकः

दोग्धृ

णिनि प्रत्यय

णिनि प्रत्यय भी कर्त्ता का अर्थ देता है।

वद् = वादिन्

भू = भाविन्

ग्रह = ग्राहिन्

दृश् = दर्शिन्

स्था = स्थायिन्

जि = जयिन्

गम = गामिन्

दा = दायिन्

हन = घातिन्

कृ = कारिन्

दातृ

दाता	दातारौ	दातारः
दातारम्	दातारौ	दातृन्
दात्रा	दातृभ्याम्	दातृभिः
दात्रे	दातृभ्याम्	दातृभ्यः
दातुः	दातृभ्याम्	दातृभ्यः
दातुः	दात्रोः	दातृणाम्
दातरि	दात्रोः	दातृषु
हे दातः!	हे दातारौ!	हे दातारः!



गामी	गामिनौ	गामिनः
गामिनम्	गामिनौ	गामिनः
गामिना	गामिभ्याम्	गामिभिः
गामिने	गामिभ्याम्	गामिभ्यः
गामिनः	गामिभ्याम्	गामिभ्यः
गामिनः	गामिनोः	गामिनाम्
गामिनि	गामिनोः	गामिषु
हे गामिन्!	हे गामिनौ!	हे गामिनः!

संस्कृतम्

पाठः 59



इस पाठ में हम
साप्तमी विभक्ति
सीखेंगे।

सप्तमी विभक्ति : क्रिया का आधार अधिकरण होता है:

मम मित्रं नगरे निवसति।

मेरा मित्र नगर में रहता है।

वृक्षे खगाः तिष्ठन्ति।

वृक्ष पर पक्षी बैठे हैं।

सप्तमी विभक्ति : क्रिया का आधार अधिकरण होता है:

मेघाः आकाशे चरन्ति।

बादल आकाश में विचरण करते हैं।

तस्य इच्छा मोक्षे अस्ति।

उसकी इच्छा मोक्ष में है।

स्निह् धातु के साथ सप्तमी का प्रयोग होता है:

गुरुः शिष्येषु स्निह्यति।

गुरुजी शिष्यों पर स्नेह रखते हैं।

माता पुत्रे स्निह्यति।

माता पुत्र पर स्नेह रखती है।

जिस उद्देश्य से कोई कर्म किया जाता है:

धान्ये क्षेत्रं कर्षन्ति कृषकाः।

किसान अनाज के लिए खेत को जोतते हैं।

व्याधः चर्मणि हन्ति मृगम्।

शिकारी चाम के लिए मृग को मारता है।

जहाँ एक क्रिया होने के बाद दूसरी क्रिया का बोध हो:

नृपे मृते नगरं व्याकुलं अभवत्।

राजा के मरने पर नगर व्याकुल हो गया।

रामे वनं गते दशरथः मृतः।

राम के वन जाने पर दशरथ मर गया।

जहाँ एक क्रिया होने के बाद दूसरी क्रिया का बोध हो:

सूर्ये अस्तं गते पक्षी नीडं प्रति चलति।

सूर्य के अस्त होने पर पक्षी घोंसले की ओर चलता है।

मेघे वर्षति मयूराः नृत्यन्ति।

मेघ के बरसने पर मोर नाचते हैं।

संस्कृतम्

पाठः 60



इस पाठ में हम
सन् और णिच् प्रत्यय
सीखेंगे ।

सन् प्रत्यय

कृ	चिकीर्षा	चिकीर्षुः	चिकीर्षति
गम्	जिगमिषा	जिगमिषुः	जिगमिषति
पठ्	पिपठिषा	पिपठिषुः	पिपठिषति
पा	पिपासा	पिपासुः	पिपासति
प्रच्छ्	पिपृच्छिषा	पिपृच्छिषुः	पिपृच्छिषति
भुज्	बुभुक्षा	बुभुक्षुः	बुभुक्षते

सन् प्रत्यय

लभ्	लिप्सा	लिप्सुः	लिप्सते
ज्ञा	जिज्ञासा	जिज्ञासुः	जिज्ञासते
जि	जिगिषा	जिगिषुः	जिगिषति
श्रु	शुश्रुषा	शुश्रुषुः	शुश्रुषते
वच्	विवक्षा	विवक्षुः	विवक्षति
हन्	जिघांसा	जिघांसुः	जिघांसति

सन् प्रत्यय

दा	दित्सा	दित्सुः	दित्सति
मृ	मुमूर्षा	मुमूर्षुः	मुमूर्षति
मुञ्च्	मुमुक्षा	मुमुक्षुः	मुमुक्षते
युध्	युयुत्सा	युयुत्सुः	युयुत्सते
लिख्	लिलिखिषा	लिलिखिषुः	लिलिखिषति
स्वप्	सुषुप्सा	सुषुप्सुः	सुषुप्सति

णिच् प्रत्यय

णिच् प्रेरणा को दिखाता है:

हन् मारना

घातयति मरवाता है

दा देना

दापयति दिलाता है

गम् जाना

गमयति भेजता है

स्था बैठना

स्थापयति रखता है

मा मापना

मापयति मपवाता है

क्री खरीदना

क्रापयति खरीदवाता है

णिच् प्रत्यय णिच् प्रेरणा को दिखाता है:

जि जीतना जापयति जितवाता है

अधि इ पढ़ना अध्यापयति पढ़ाता है

जागू जागना जागरयति जगाता है

कृ करना कारयति करवाता है

पच् पकाना पाचयति पकवाता है

शु सुनना श्रावयति सुनाता है

णिच् प्रत्यय

णिच् प्रेरणा को दिखाता है:

चल् चलना

चालयति चलाता है

वह् बहना

वाहयति बहाता है

मुच् छोड़ना

मोचयति छुड़वाता है

दृश् देखना

दर्शयति दिखाता है

ज्वल् जलना

ज्वलयति जलाता है

भी डरना

भीषयति डराता है

णिच् प्रत्यय णिच् प्रेरणा को दिखाता है:

पठ् पढ़ना पाठयति पढ़वाता है

ग्रह् पकड़ना ग्राहयति पकड़वाता है

प्राप् पाना प्रापयति पहुँचाता है

जो सामग्री कंठस्थ करनी चाहिए,
उसमें यह पुस्तिका आपको सहायता देती है,
पूरे पाठ तो आप **knowledgology** पर ही
देख सकते हैं।

knowledgology

आपका अपना **YouTub**e channel है

SUBSCRIBE



knowledgology.com

संस्कृतम्

पाठः 61



इस पाठ में हम
कर्मवाच्य
सीखेंगे ।

वाच्य

जब क्रिया कर्त्ता के अधीन हो तो **कर्त्ता वाच्य** होता है:

मैं पुस्तक पढ़ता हूँ ।

मृग घास खाते हैं ।

तुम चित्र बनाते हो ।

वाच्य

जब क्रिया कर्म के अधीन हो तो **कर्म वाच्य** होता है:

मेरे द्वारा पुस्तक पढ़ी जाती है ।

मृगों के द्वारा घास खाया जाता है ।

तुम्हारे द्वारा चित्र बनाया जाता है ।

वाच्य

मैं पुस्तक पढ़ता हूँ।

मृग घास खाते हैं।

तुम चित्र बनाते हो।

मेरे द्वारा पुस्तक पढ़ी जाती है।

मृगों के द्वारा घास खाया जाता है।

तुम्हारे द्वारा चित्र बनाया जाता है।

वाच्य

मैं पुस्तक पढ़ता हूँ।

मृग घास खाते हैं।

तुम चित्र बनाते हो।

मेरे द्वारा पुस्तक पढ़ी जाती है।

मृगों के द्वारा घास खाया जाता है।

तुम्हारे द्वारा चित्र बनाया जाता है।

वाच्य

English में इसे **Voice** कहते हैं।

मैं पुस्तक लिखता हूँ।

I write a book.

Active Voice

मेरे द्वारा पुस्तक लिखी जाती है।

A book is written by me.

Passive Voice

वाच्य

कथयति

कथ्यते

कथयन्ति

कथ्यन्ते

वाच्य

करोति

कुर्वन्ति

क्रियते

क्रियन्ते

वाच्य

शिक्षाति

शिक्षान्ति

शिक्षते

शिक्षन्ते

वाच्य

गणायति

गण्यते

गणयन्ति

गण्यन्ते

वाच्य

गायति

गायन्ति

गीयते

गीयन्ते

वाच्य

खादति

खादन्ति

खाद्यते

खाद्यन्ते

वाच्य

लिखति

लिखन्ति

लिख्यते

लिख्यन्ते

वाच्य

पठति

पठन्ति

पठ्यते

पठ्यन्ते

वाच्य

सः पत्रम् लिखति ।

तेन पत्रम् लिख्यते ।

वानराः फलम् खादन्ति ।

वानरैः फलम् खाद्यते ।

अहम् गीताम् पठामि ।

मया गीता पठ्यते ।

वाच्य

आप्	आप्यते	आप्यन्ते
ग्रह्	ग्रह्यते	ग्रह्यन्ते
घ्रा	घ्रायते	घ्रायन्ते
चिन्त्	चिन्त्यते	चिन्त्यन्ते
चुर्	चोर्यते	चोर्यन्ते

वाच्य

छिद्

छिद्यते

छिद्यन्ते

जन्

जन्यते

जन्यन्ते

जि

जीयते

जीयन्ते

दा

दीयते

दीयन्ते

नम्

नम्यते

नम्यन्ते

वाच्य

निन्द्

निन्द्यते

निन्द्यन्ते

पा

पीयते

पीयन्ते

प्रच्छ्

पृच्छ्यते

पृच्छ्यन्ते

बन्ध्

बध्यते

बध्यन्ते

भी

भीयते

भीयन्ते

वाच्य

वच्

उच्यते

उच्यन्ते

वप्

उप्यते

उप्यन्ते

वस्

उष्यते

उष्यन्ते

शास्

शिष्यते

शिष्यन्ते

श्रु

श्रूयते

श्रूयन्ते

वाच्य

स्मृ

स्मर्यते

स्मर्यन्ते

हन्

हन्यते

हन्यन्ते

नी

नीयते

नीयन्ते

भक्ष्

भक्ष्यते

भक्ष्यन्ते

क्री

क्रीयते

क्रीयन्ते

वाच्य

लट् लकार

बध्यते

बध्येते

बध्यन्ते

बध्यसे

बध्येथे

बध्येध्वे

बध्ये

बध्यावहे

बध्यामहे

वाच्य

लट् लकार

श्रूयते

श्रूयेते

श्रूयन्ते

श्रूयसे

श्रूयेथे

श्रूयेध्वे

श्रूये

श्रूयावहे

श्रूयामहे

संस्कृतम्

पाठः 62



इस पाठ में हम
कर्मवाच्य
सीखेंगे ।

वाच्य

कृतु प्रत्यय से बने वाक्य का वाच्य

क प्रत्यय से बदलते हैं:

वाच्य

क्तवतु प्रत्यय से बने वाक्य का वाच्य

रामः रावणम् हतवान् । क्त प्रत्यय से बदलते हैं:

रामेण रावणः हतः ।

सः गीतं श्रुतवान् ।

तेन गीतम् श्रुतम् ।

कन्या पुष्पम् दृष्टवती ।

कन्यया पुष्पम् दृष्टम् ।

वाच्य

तव्य और अनीयर् लगाकर भी
कर्मवाच्य बनाते हैं:

वाच्य

तव्य और अनीयर् लगाकर भी
कर्मवाच्य बनाते हैं:

त्वया अवश्यम् आगन्तव्यम् ।

असत्यम् न वक्तव्यम् ।

नृपेण प्रजा रक्षणीया ।

मया पत्रम् लेखनीयम् ।

गुरुः सदा पूजनीयः ।

छात्राः शब्दम् कुर्वन्ति।

छात्रैः शब्दम् क्रियते।

यूयम् किम् कुरुथ?

युष्माभिः किम् क्रियते?



अहम् गीतानि श्रुणोमि।

मया गीतानि श्रूयन्ते।

रामः गाम् दोग्धि।

रामेण गौः दुह्यते।



अहम् त्वाम् स्मरामि।

त्वम् मया स्मृतसे।

शिष्याः गुरुम् पृच्छन्ति।

शिष्यैः गुरुः पृच्छ्यते।

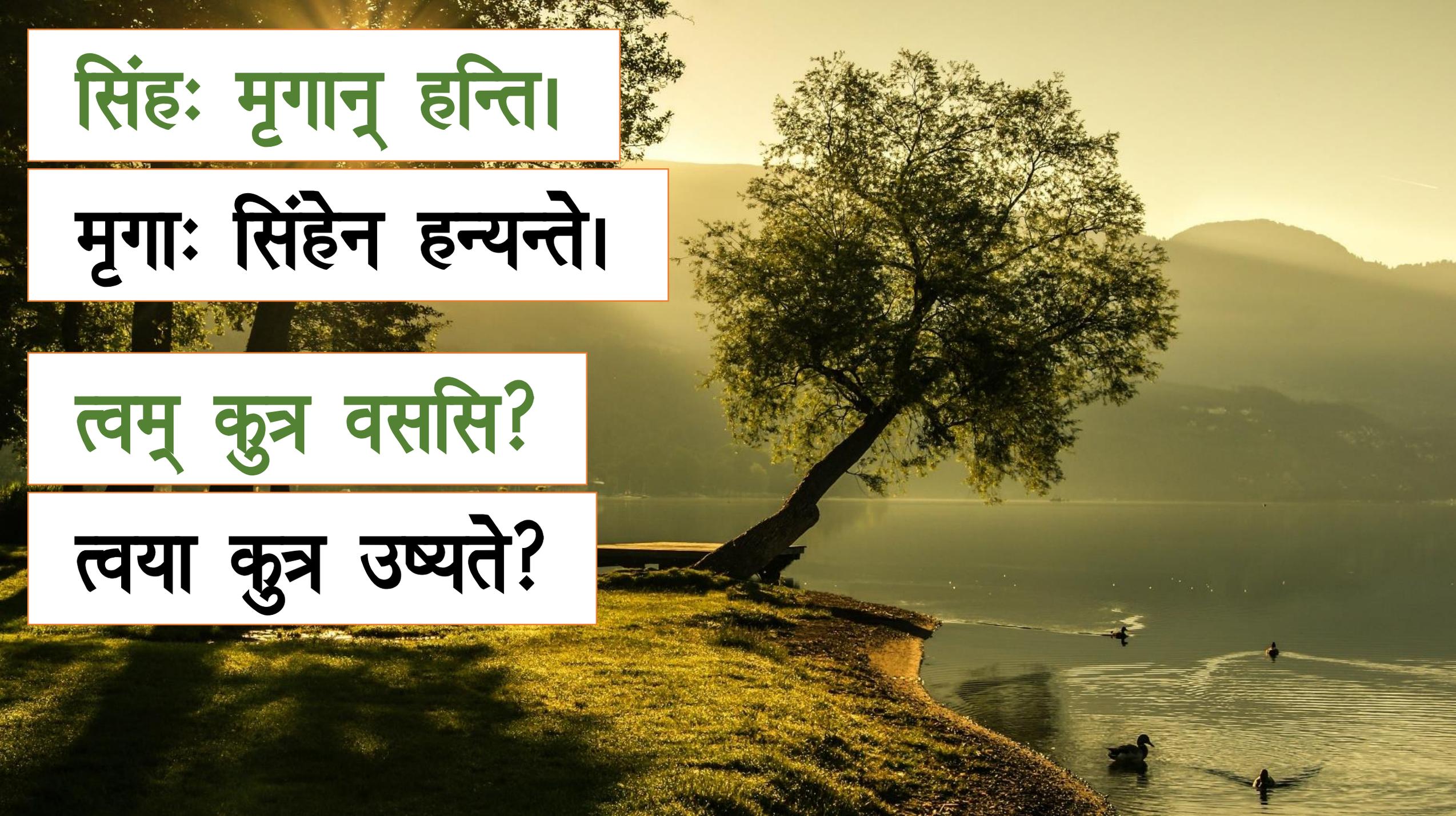


सिंहः मृगान् हन्ति।

मृगाः सिंहेन हन्यन्ते।

त्वम् कुत्र वससि?

त्वया कुत्र उष्यते?



चौराः धावन्ति।

चौरैः धाव्यते।

सर्वे हसन्ति।

सर्वैः हस्यते।



माता क्षीरम् पचति।

मात्रा क्षीरम् पच्यते।

वयम् कथाम् श्रुणुमः।

अस्माभिः कथा श्रूयते।



संस्कृतम्

पाठः 63



सर्व सर्वनाम,
कञ् प्रत्यय और चित्
का प्रयोग सीखेंगे ।

सर्वः

सर्वः
सर्वम्
सर्वेण
सर्वस्मै
सर्वस्मात्
सर्वस्य
सर्वस्मिन्
हे सर्व!

सर्वौ
सर्वौ
सर्वाभ्याम्
सर्वाभ्याम्
सर्वाभ्याम्
सर्वयोः
सर्वयोः
हे सर्वौ!

सर्वे
सर्वान्
सर्वैः
सर्वेभ्यः
सर्वेभ्यः
सर्वेषाम्
सर्वेषु
हे सर्वे!



कञ् प्रत्यय

कञ् प्रत्यय दृश् धातु के
साथ लगता है और जैसा,
के समान अर्थ देता है

कञ् प्रत्यय

तद् कञ् दृश् = तादृश् उसके समान

यद् कञ् दृश् = यादृश् जिसके समान

इदम् कञ् दृश् = ईदृश् इसके समान

किम् कञ् दृश् = कीदृश् किसके समान

एतद् कञ् दृश् = एतादृश् इसके समान

कञ् प्रत्यय

अस्मद् कञ् दृश् = अस्मादृश् मादृश् हमारे समान
युष्मद् कञ् दृश् = युष्मादृश् त्वादृश् तुम्हारे समान
भवत् कञ् दृश् = भवादृश् आपके समान

कञ् प्रत्यय

तादृश

एतादृश

यादृश

अस्मादृश मादृश

ईदृश

युष्मादृश त्वादृश

कीदृश

भवादृश

भवादृक्

भवादृशम्

भवादृशा

भवादृशे

भवादृशः

भवादृशः

भवादृशि

हे भवादृक्!

भवादृशौ

भवादृशौ

भवादृग्भयाम्

भवादृग्भयाम्

भवादृग्भयाम्

भवादृशोः

भवादृशोः

हे भवादृशौ!

भवादृशः

भवादृशः

भवादृग्भिः

भवादृग्भ्यः

भवादृग्भ्यः

भवादृशाम्

भवादृक्षु

हे भवादृशः!

भवादृश

ईदृश

ईदृक्

ईदृशौ

ईदृशः

ईदृशाम्

ईदृशौ

ईदृशः

ईदृशा

ईदृग्भ्याम्

ईदृग्भिः

ईदृशे

ईदृग्भ्याम्

ईदृग्भ्यः

ईदृशः

ईदृग्भ्याम्

ईदृग्भ्यः

ईदृशः

ईदृशोः

ईदृशाम्

ईदृशि

ईदृशोः

ईदृक्षु

हे ईदृक्!

हे ईदृशौ!

हे ईदृशः!

चित्

कश्चित्

कोई

केचित्

कोई लोग

केनचित्

किसी के द्वारा

कस्मैश्चित्

किसी के लिए

कस्माच्चित्

किसी से

चित्

कस्याचित्

किसी का

कस्मिंश्चित्

किसी में

केषुचित्

किन्हीं में

काचित्

कोई

किंचित्

कुछ

संस्कृतम्

पाठः 64



अव्यय शब्द

अव्यय

अकस्मात् अचानक

अचिरम् जल्दी

अतः इसलिए

अत्र यहाँ

अचिरात् जल्दी, शीघ्र

अद्य आज

अकस्मात् एकः सिंहः आगच्छत् ।

अचिरम् चलत ।

अतः वयम् संस्कृतम् पठेम ।

अत्र एकं विशालं पुस्तकालयं अस्ति ।

अचिरात् एव वृष्टिः अभवत् ।

अद्य मम जन्मदिनम् ।



अव्यय

अथ अब

अधुना अब

इदानीम् अब

सम्प्रति अब

अधः नीचे

अपि भी



अथ प्रथमः अध्यायः।

अधुना किम् कर्तव्यम्?

इदानीम् मे पालिका।

अधः पतति जलम्।

अहम् अपि त्वया सह गमिष्यामि।

अव्यय

इति ऐसा

समाप्ति

इह यहाँ

इव जैसे

इत्थम् इस प्रकार

उपरि ऊपर

इति उक्त्वा सः निवृत्तः ।

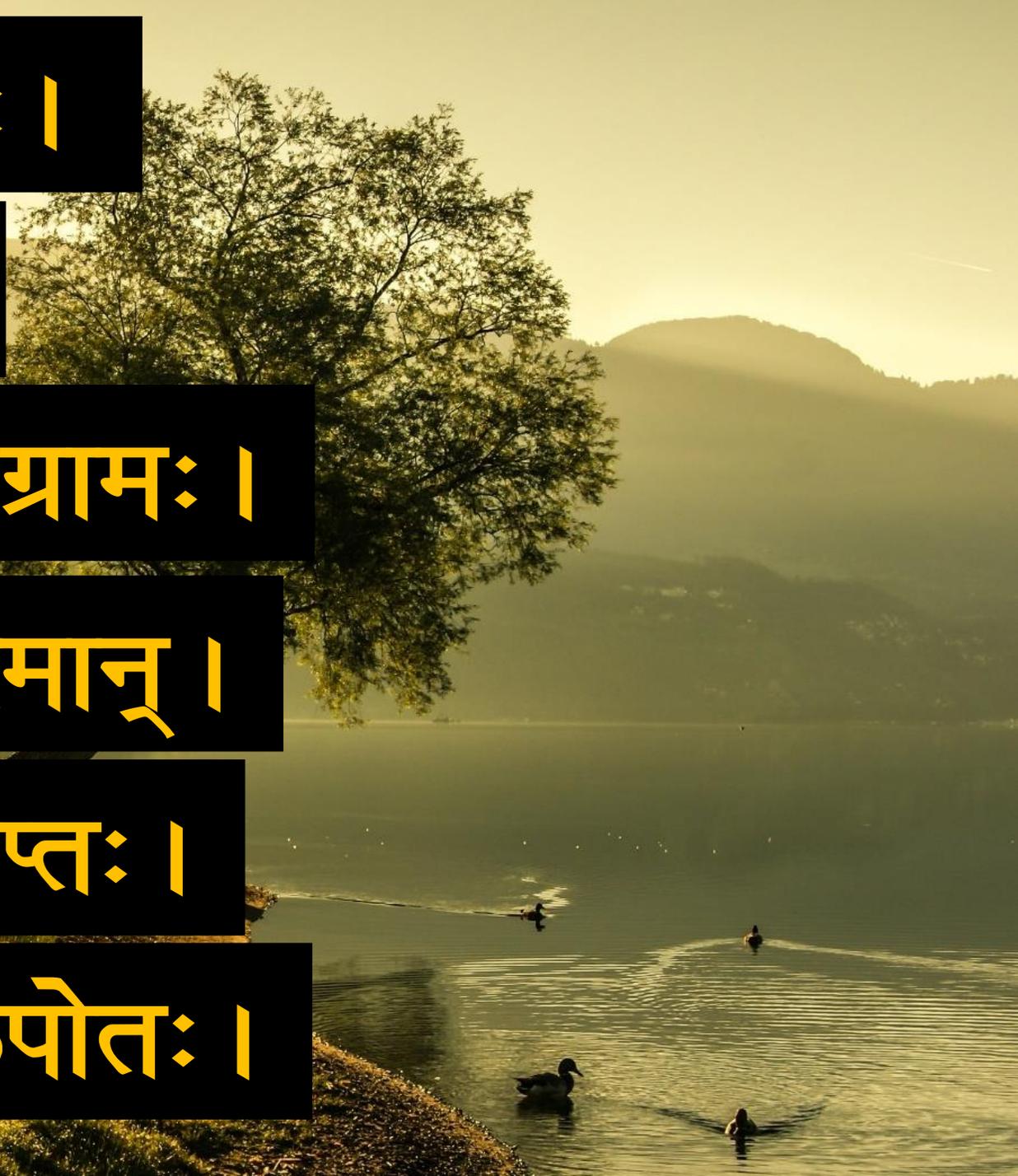
इति प्रथमः अध्यायः ।

न अस्ति इह कश्चित् ग्रामः ।

सः बृहस्पतिः इव बुद्धिमान् ।

इत्थम् राजा मरणम् प्राप्तः ।

उपरि उड्डयति असौ कपोतः ।



अव्यय

उभयतः दोनों ओर

ऋते बिना

एव ही

एवम् इस प्रकार

क्व कहाँ

खलु निश्चित



ग्रामम् उभयतः वनानि।

ज्ञानम् ऋते न मुक्तिः।

अहम् एव तव छात्रः।

एवम् अवदत् सः पुरुषः।

क्व सः अस्ति?

कृष्णः खलु कंसम् अवधीत्।

अव्यय

च और

चिरम् , चिरेण देर तक, देर से

ततः उसके बाद

तत्र वहाँ

तथा उस प्रकार

यत्र जहाँ

यथा जैसे, जिस प्रकार

कुत्र कहाँ

अत्र यहाँ

सर्वत्र सब जगह



रामः लक्ष्मणः च वनम् गतवन्तौ।

चिरम् सा गीतम् अगायत्।

ततः सः स्वगृहम् गतः।

संस्कृतम्

पाठः 65



अव्यय शब्द

अव्यय

तावत् उतना

यावत् जितना

कियत् कितना

दिवा दिन में

अहर्निशम् दिन-रात

दिष्ट्या सौभाग्य से

नूनम् निश्चित रूप से

एकदा एक बार

अनेकदा अनेक बार

सर्वदा हर बार

सर्वथा सब प्रकार से

पंचथा पाँच प्रकार से

श्वः कल

परश्वः परसों

दिवा मा स्वाप्सीः ।

दिष्ट्या सः जीवति ।

सः नूनम् आगमिष्यति ।

श्वः त्वम् कुत्र आसीः?

परश्वः राजा अत्र आगमिष्यति ।



अव्यय

परितः चारों ओर

पुनः फिर से

पुरा पहले

पुरतः पुरस्तात् सामने

पृथक् अलग

मा नहीं, न, ना



नगरम् परितः राजमार्गम् वर्तते।

पुरा आसीत् समुद्रगुप्तः नाम राजा।

पुरतः एकः शुष्कः वृक्षः।

माम् न त्वत् पृथक् मनस्व।

मा प्रयच्छ ईश्वरे धनम्।

अव्यय

मुहुः बार-बार

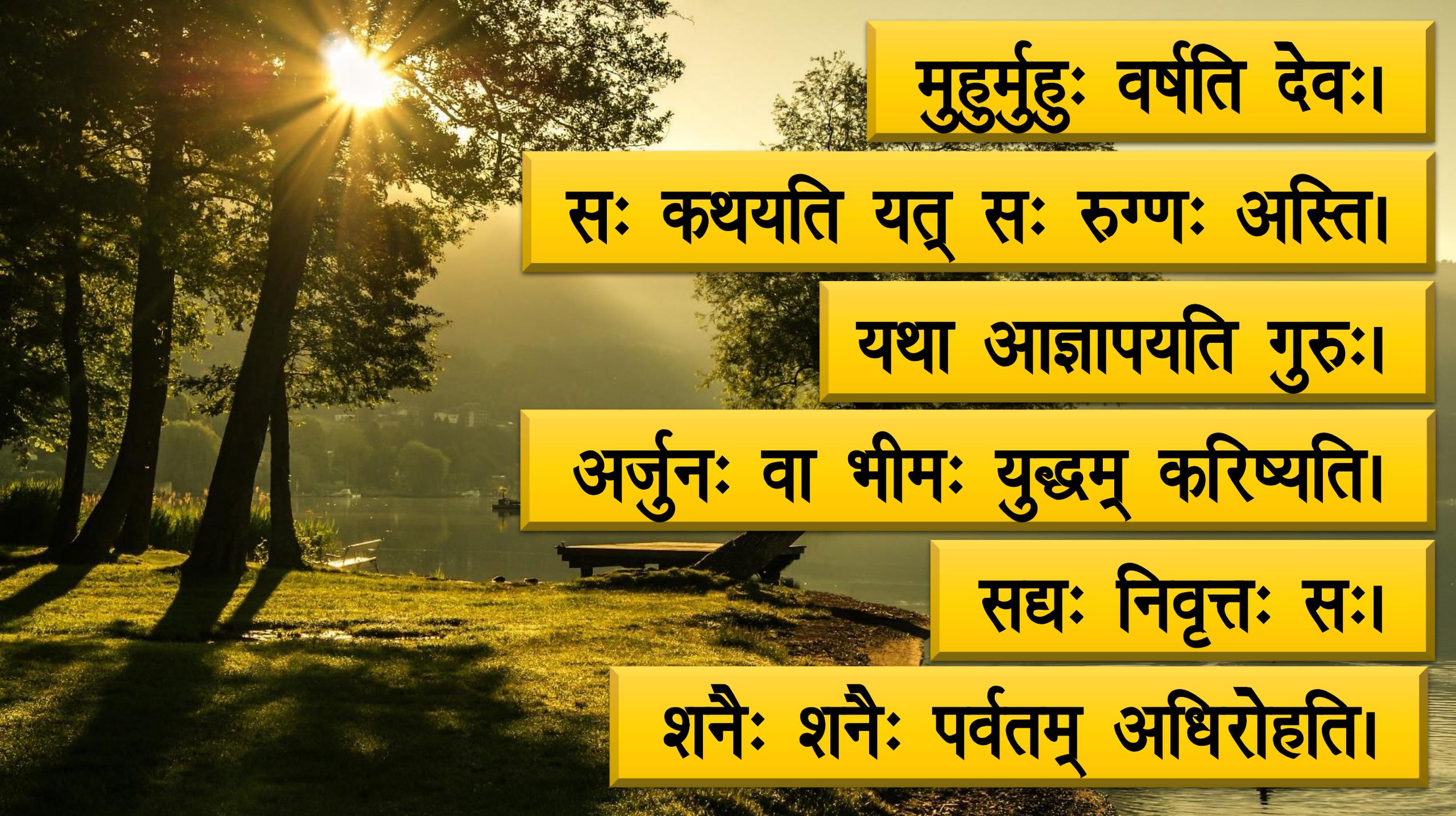
यत् कि

यथा जैसे

वा या, अथवा

शनैः शनैः धीरे-धीरे

सद्यः जल्दी



मुहुर्मुहुः वर्षति देवः।

सः कथयति यत् सः रुग्णः अस्ति।

यथा आज्ञापयति गुरुः।

अर्जुनः वा भीमः युद्धम् करिष्यति।

सद्यः निवृत्तः सः।

शनैः शनैः पर्वतम् अधिरोहति।

अव्यय

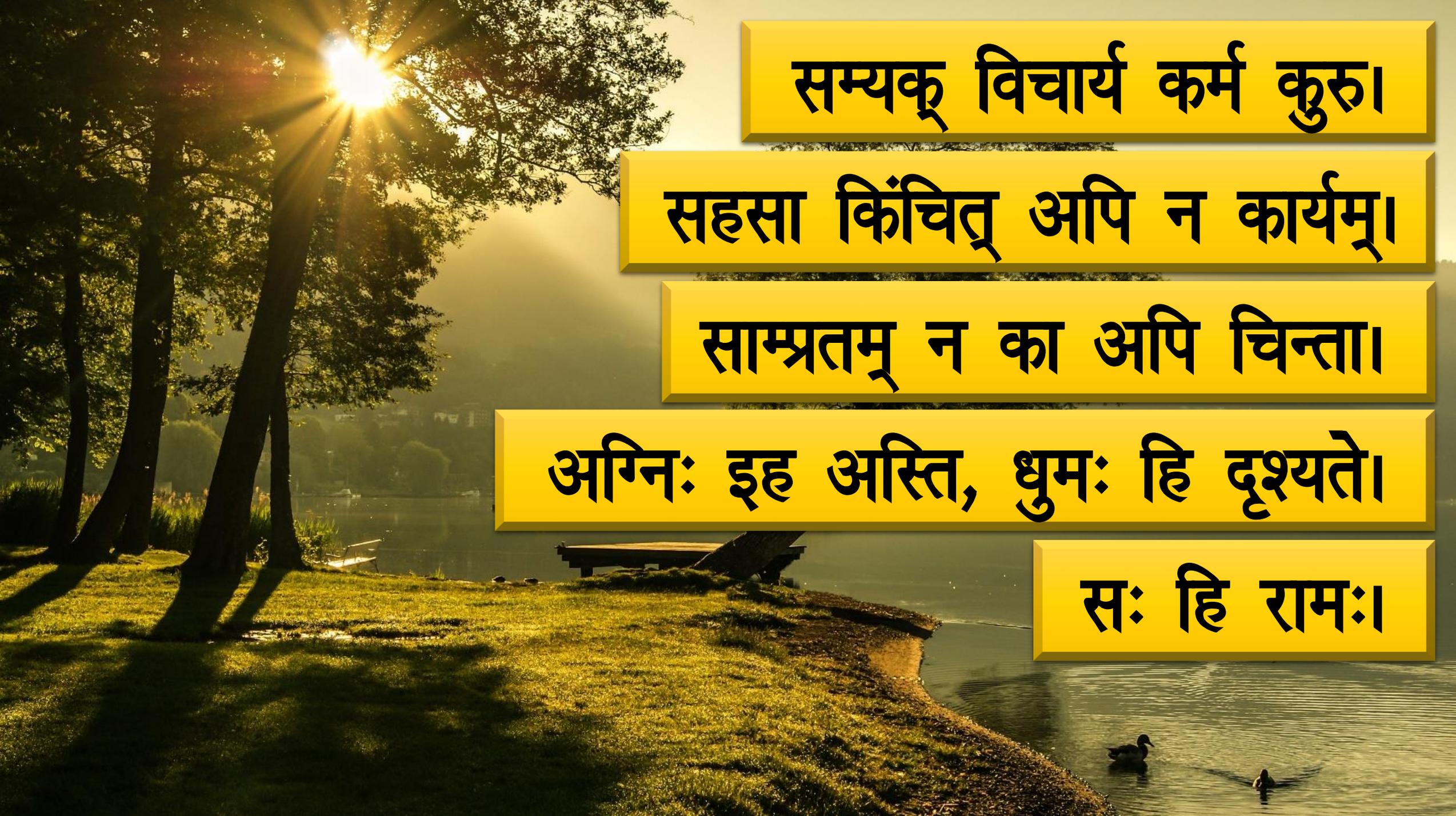
सम्यक् सही ढंग से

सहसा अचानक, एकदम

साम्प्रतम् अब

हि क्योंकि

निश्चित, बिल्कुल



सम्यक् विचार्य कर्म कुरु।

सहसा किञ्चित् अपि न कार्यम्।

साम्प्रतम् न का अपि चिन्ता।

अग्निः इह अस्ति, धुमः हि दृश्यते।

सः हि रामः।

संस्कृतम्

पाठः 66



इस पाठ में हम
लिट् लकार
का अध्ययन करेंगे ।

लिट् लकार

यह बहुत पहले हुई घटना को दिखाता है:-

वाल्मीकि ने रामायण लिखी।

ईश्वर ने संसार की रचना की।

ऋषियों ने वेद लिखे।

द्वापर के अंत में महाभारत युद्ध हुआ।

लिट् लकार

एकवचन

द्विवचन

बहुवचन

प्रथम पुं

पपाठ

पेठतुः

पेठुः

मध्यम पुं

पेठिथ

पेठथुः

पेठ

उत्तम पुं

पपाठ

पेठिव

पेठिम

पठ् पठना

लिट् लकार

गम् जाना

एकवचन

द्विवचन

बहुवचन

प्रथम पुं

जगाम

जग्मतुः

जग्मुः

मध्यम पुं

जगामिथ

जग्मथुः

जग्म

उत्तम पुं

जगाम

जग्मिव

जग्मिम

लिट् लकार

भू होना

एकवचन

द्विवचन

बहुवचन

प्रथम पुं

बभूव

बभूवतुः

बभूवुः

मध्यम पुं

बभूविथ

बभूवथुः

बभूव

उत्तम पुं

बभूव

बभूविव

बभूविम

लिट् लकार

एकवचन

बहुवचन

चल् चलना

चचाल

चेत्सुः

त्यज् त्यागना

तत्याज

तत्यजुः

नम् झुकना

ननाम

नेसुः

पत् गिरना

पपात

पेतुः

लिट् लकार

एकवचन

बहुवचन

क्रीड् खेलना

चिक्रीड

चिक्रीडुः

गद् बोलना

जगाद्

जगद्दुः

जि जीतना

जिगाय

जिग्युः

तप् तपना

तताप

तेपुः

लिट् लकार

	एकवचन	बहुवचन
दृश् देखना	ददर्श	ददृशुः
नन्द खुश होना	ननन्द	ननन्दुः
पच् पकाना	पपाच	पेचुः
पिब् पीना	पपौ	पपुः

लिट् लकार

		एकवचन	बहुवचन
यज्	यज्ञ करना	इयाज	ईजुः
याच्	मांगना	ययाच	ययाचुः
रक्ष्	रक्षा करना	ररक्ष	ररक्षुः
श्रु	सुनना	शुश्राव	शुश्रुवुः

लिट् लकार

हस् हँसना

ब्रू बोलना

या जाना

रुद् रोना

एकवचन

जहास

उवाच

ययौ

रुरोद

बहुवचन

जहसुः

ऊचुः

ययुः

रुरुदुः

लिट् लकार

हन् मारना

दा देना

नृत् नाचना

युध् युद्ध करना

एकवचन

जघान

ददौ

ननर्त

युयुधे

बहुवचन

जघ्नुः

ददुः

ननृतुः

युयुधुः

लिट् लकार

क्षिप् फेंकना
मुञ्च छोड़ना
लिख् लिखना
कृ करना

एकवचन

चिक्षेप

मुमोच

लिलेख

चकार

बहुवचन

चिक्षिपुः

मुमुचुः

लिलेखुः

चक्रुः

लिट् लकार

कम्प् काँपना

भाष् बोलना

सह् सहना

लभ् पाना

आत्मनेपदी धातुएँ

एकवचन

चकम्पे

बभासे

सेहे

लेभे

बहुवचन

चकम्पिरे

बभासिरे

सेहिरे

लेभिरे

वानरम् पश्य जहास भीमसेनः।

सरयुतटे इयाज अश्वमेधम् रामः।

चकार ताण्डवम् शिवः।

रामः ददर्श रावणम् मुमोच च बाणम्।

वेदमन्त्राणि पेतुः ऋषयः।

दुःखिनः देवाः जग्मुः ब्रह्माणम्।

भीमः पपौ दुःशासनस्य रक्तम्।

सिद्धार्थः तत्याज गृहम् बुद्धः च बभूव।

गोविन्दसिंहः ररक्ष भारतभूमिम्।

हमारा प्राथमिक व्याकरण
संपूर्ण होता है।

धन्यवाद।

जय भारतः जय भारती



॥ इति श्रीः ॥